ARYAVART SHODH VIKAS PATRIKA
ISSN No.: 2347-2944, RNI TITLED No: UPBIL04292,
RNI REG.No.:UPBIL/2014/66218, SOCI.REG. No. 561/2013-14
Vol.-5, No.-I, PP-160-161, YEAR JUNE 2016

भूमण्डलीकरण, राजनीतिक संस्कृतिकरण एवं अपराधीकरण

❑ डॉ0 सुनील कुमार सुरोथिया

भारतीय राजनीतिक संस्कृति में समता, स्वतंत्रता, न्याय तथा भ्रातृत्व के सिद्धान्तों का विशेष महत्त्व रहा है। लोकतांत्रिक मूल्यों एवं वयस्क मताधिकार के जरिये भारतीय राजनीतिक संस्कृति का विकास संभव है। डॉ.बी.आर. अम्बेडकर, डॉ. राजेन्द्र प्रसाद, पं. जवाहरलाल नेहरू तथा लाल बहादुर शास्त्री ने अथक प्रयत्नों के आधार पर भारतीय लोकतंत्र के आयामों का स्वरूप खड़ा किया। डॉ. जाकिर हुसैन फखरूद्दीन अली अहमद तथा अन्य महापुरुषों ने भारतीय राजनीति के धर्मनिरपेक्ष आधार को प्राणवंत किया है। वैश्वीकरण के कारण राजनीतिक समीकरणों में तीव्र परिवर्तन की स्थिति उत्पन्न हो रही है। आर्थिक स्वार्थों के कारण राजनीतिक स्तर पर तोड़–जोड़ की प्रक्रिया जारी है। राजनीतिक वर्चस्व के आधार पर आर्थिक वर्चस्व प्राप्त करने की प्रवृत्ति बढ़ती जा रही है। व्यक्ति बाजारवाद तथा उदारवाद के दौर में राजनीतिक का अनैतिक तथा अवैधानिक मूल्यों को प्राप्त करने के लिए इस्तेमाल कर रहा है। वैश्वीकरण के कारण राजनीति का अपराधीकरण हो रहा है। वैश्वीकरण के बाद आतंकवाद की स्थिति अधिक तेजी के साथ पनप रही है। क्या वैश्वीकरण भारतीय लोकतंत्र के बुनियादी आधारों को ध्वस्त कर रहा है? क्या वैश्वीकरण के कारण भारतीय राजनीतिक संस्कृति में राजनीति का अपराधीकरण हो रहा है?क्या वैश्वीकरण के कारण चुनाव की राजनीति प्रभावित हो रही है? क्या वैश्वीकरण के कारण पंचायत की राजनीति तथा ग्रामीण स्तर की शक्ति संरचना भी प्रभावित हो रही है?क्या वैश्वीकरण एवं गठबंधन की राजनीति के बीच स्पष्ट संबंध मौजूद है? क्या उदारवाद, बाजारवाद एवं उपभोक्तावाद के कारण भारत में राजनीति संस्कृति के अन्तर्गत विभिन्न राजनीतिक दलों के घोषणा पत्रों के स्वरूप भी प्रभावित हो रहा है?

प्राचीन समय में भारतीय संस्कृति की विश्व में एक अलग पहचान है। वह अपने ज्ञानमय प्रकाश से पथभ्रष्ट मानवता को निरन्तर राह दिखाते आयी है 21वीं सदी में भारत के राष्ट्र निर्माता युवा वर्ग जिनकी आवश्यकता देश के विकासशील क्षेत्रों को है, वे नशाखोरी, अपराध और आतंकवाद के शिकंजे में कसे है। यह वही राष्ट्र है, जहाँ के युवा वर्ग ने गाँधी जी केसाथ कन्धे से कन्धा मिलाकर देश को स्वतंत्र कराया, तो क्या कारण है कि आज वे मूल्यहीन, दिशा भ्रमित जैसे खड़े है? इसका बहुत बड़ा श्रेय वैश्वीकरण और उपभोक्तावाद को जाता है। अर्थशास्त्रियों द्वारा वैश्विक शब्द का प्रयोग विश्व व्यापार के सन्दर्भ में किया गया है। आज यह शब्द समाज के सभी पक्षों को प्रभावित किये हुए हैं। उभरते वैश्विक संकट से राजनीतिक, सांस्कृतिक तथा धार्मिक सभी पक्ष जूझ रहे हैं। भारतीय अर्थ व्यवस्था में वैश्वीकरण के परिणाम स्वरूप बढ़ता उपभोक्तावाद विभिन्न समस्याओं की जड़ है। सभी उद्योगपति अपने उत्पादों की बिक्री हेतु किसी भी स्तर पर उतर आ रहे हैं। ये गिरता स्तर एक वस्तु पर दो मुफ्त या विज्ञापन में अश्लीलता। एक तरफ बेकारी और व्यक्ति की बढ़ती आवश्यकताओं के कारण उपभोक्ता अपनी आवश्यक आवश्यकताओं को जुटाने में भी सक्षम नहीं है तो दूसरी तरफ उपभोक्तावाद एक राक्षस के समान व्यक्ति को निगलने के लिए खड़ा है। उपभोक्तावाद ने अन्धकार, निराशा और उन्माद का ऐसा घेरा बना डाला है कि जीवन के आदर्श, मूल्य व सर्वहितकारी लक्ष्यों के प्रति हमारी निष्ठा की चूलें हिल गयी है। परिवार के स्तर से लेकर राष्ट्र के स्तर तक हिंसा, कामुकता और अश्लीलता में वृद्धि हो रही है। अपराध सम्बन्धी आंकड़े इसकी स्पष्ट रूप से पुष्टि करते हैं और कई बाद चौंका देने वाली घटनाएँ तक सामने आती हैं जैसे रक्षकों का भक्षक बन जाना।

आज के युवा वर्ग को कम से कम समय में अधिक से अधिक प्राप्त करने की चाह में आसानी से हिम्मत और बहशत की सीमाएँ लांघ जाता है। आदर्श हीनता की स्थितियों के शिकार किशोर अंजाम की परवाह किये बिना कोई भी खतरनाक कदम उठा लेता

❑ असि0 प्रोफेसर, राजनीति विज्ञान विभाग, राजकीय डिग्री कॉलेज, मेहरौनी, ललितपुर, झांसी (उ0प्र0), भारत

है, क्योंकि जब कोई गन्तव्य न हो, मात्र अन्धेरे में हाथ–पैर मारकर आगे बढ़ने का प्रयास कर रहे युवा वर्ग से कुछ टूटने व बिखरने कि पूर्व सम्भावना बनी रहती है, वो चाहे परिवार हो, समाज हो, संस्कृति हो या स्वयं उसका व्यक्तित्व हो।

इस उभरते वैश्विक संकट से विश्व के साथ–साथ भारत की अस्मिता को बचाने का कार्य भी हम भारतीयों को मिलकर करना है। हमारी संस्कृति में पलायन को कभी स्थान नहीं दिया गया है। अतएवहमें वैश्वीकरण को नकारना नहीं है वरन् आवश्यकता है अधिक से अधिक प्राप्त करने वालों की स्थिति को देखते हुए सतर्क होकर सही मार्ग तलाशने की। आज अमेरिका भौतिकता की चरम सीमा पर रहते हुए भी असुरक्षित है। इस वैश्विक संकट से भयभीत नहीं होना है, और न ही वैश्विक शक्ति, उपभोक्तावाद और आतंकवाद से झुकना है। व्यापार के क्षेत्र में इस बात के लिए भी सतर्क रहना है कि पुराना इतिहास दोहराया भी न जाय जिससे व्यापार के नाम पर हम गुलामी के जंजीरों में जकड़ लिए जायं। प्रस्तुत शोध–पत्र में राजनीति शास्त्र के उपागमों एवं राजनीतिक संस्कृति के सिद्धान्तों के आधार पर वैश्वीकरण एवं राजनीति के अपराधीकरण के संबंध में प्रमाणिक तथ्यों का अनुशीलन एवं विश्लेषण प्रस्तुत किया गया है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. Mishra P. and Prusty R., Indian Insutry and Liberalised Rolicy Regime, Yojana, Vol. 45, Nov. 2001
2. Malik, M.S., Globlization and Human Resource Development Yojana, March, 2001
3. Robertson R., Globalisation: Social theory and Global Culture, London Sage Publication, 1992
4. Ross, G., Labour versus globlisation, Annuals of the American Acaemy of Political Social Sciences, Vol. 570 (July) P.P.M. and 78 as abstracted by the American Resource Centre, NewDelhi, 2000
5. श्रीवास्तव, डॉ0 राजीव कुमार, वैश्वीकरण एवं समाज, वैभव लक्ष्मी प्रकाशन, वाराणसी, संस्करण 2012–2013 प्रथम।
6. ए. अहमद सिद्दकी : उदारीकरण और श्रम सुधार, योजना, योजना भवन, संसद मार्ग, नई दिल्ली, मई 2003

*****